आभार

आशुतोष के बिना मै अपना शोधपत्र पूरा करने का गौरव कभी हासिल नहीं कर सकती थी। काम से छुट्टी लेकर ओर कितनी ही बार काम से वापस थके मादे लौटकर उसने रात दर तक जगकर मेरे काम में मदद की। वो पल जब काम के बोझ से ऊबकर मैं निराश होने लगती तो वही था जो विश्वास दिलाता कि मै कर पाऊंगी और मुझे करना ही होगा। जब याद करती हूँ वो सब तो दिल उसके प्रति प्यार ओर आभार से भर उठता है।

मेरे सुपरवाइजर डा. वसंत गद्रे के मार्गदर्शन और सहयोग की वजह से ही यह काम पूरा हो पाया है। इस काम को पूरा करने में लगे पांच वर्षों के दौरान मुझे बराबर इनका साथ मिला। मेरा उनको सादर धन्यवाद।

यही वह समय है जब मै सच्चे दिल से अपना आभार श्रीमति मृणाल पांडे के प्रति व्यक्त करना चाहुंगी, जिन्होने अपने अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रम के वाबजूद मेरे शोधपत्र को पढ़ने का समय निकाला और अपने अमूल्य सुझाव दिये। बिल्कुल पहली बार तैयार शोधपत्र को लेकर मैं कुछ आंशकित सी थी। तब डॉ. विभा मौर्या ने उसे पढ़ा और उसमें आवश्यक सुधार की गुजांइश भी सुझायीं। उनकी इस सहायता के लिए मैं उन्हे धन्यवाद देती हूँ। साथ ही मैं प्रोफेसर गांगूली का शुक्रिया अदा करना चाहूंगी जिन्होंने निरंतर इस काम में रूचि दिखाकर मुझे प्रोत्साहित किया।

चाचा और चाची जिनका प्यार और आर्शीवाद हमेशा मेरे साथ है, ने समय समय पर मेरा मनोबल ऊंचा किया, अभिताभ जिसने लगभग तैयार शोधपत्र को जांचने संवारने का महत्वपूर्ण काम किया, आलोक और नमिता जो साथ रहकर दोस्ती का अहसास दिलाते रहे, इन सबके लिए मेरा हर धन्यवाद कम है।

आखिर में मैं ज़िक्र करना चाहुंगी, अपने उन दोस्तों को जो बहुत महत्वपूर्ण है जिन्होंने मुझ पर विश्वास किया। और यही विश्वास मेरा विश्वास बना, मेरी शक्ति बना, मेरी प्रेरणा बना इस शोध कार्य को पूरा करने की। इन लोगों को मेरा हार्दिक धन्यवाद।

मनीषा तनेजा